अध्याय 3

शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका

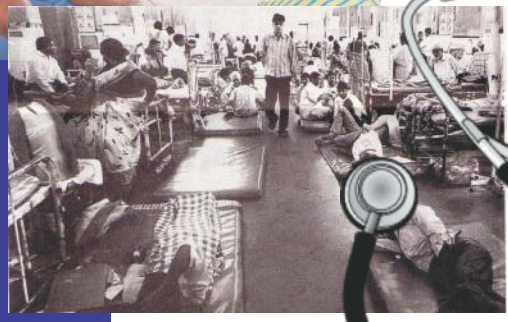

सड़क, बिजली, कानून व्यवस्था, आपदा के समय राहत लोगों का लोकतांत्रिक अधिकार है। इसलिए अपेक्षा होती है कि लोगों द्वारा चुनी हुई सरकार इसे पूरा करे। इस अध्याय में हम लोग शिक्षा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सरकार की भूमिका को समझेंगे और देखेंगे कि यह सरकार के काम से किस प्रकार जुड़ी हुई है।

शिक्षा हमारे जीवन के विकास के लिए ज़रूरी है। अर्थात् वह दुनिया को

समझने का मौका देती है, आत्मविश्वास देती है और व्यक्ति व समाज को बेहतर बनाने की कोशिश करती है। शिक्षा इस बात के लिए सक्षम बनाती है कि हम अपनी रुचि के अनुसार काम ढूँढ़ पाएँ। समाज के लोग किसी समस्या पर मिल-जुल कर बातचीत कर सकें और उसका समाधान निकाल सकें। इसके अलावा एक शिक्षित व्यक्ति अदालत में अपना बचाव करने, बैंक से ऋण लेने, वैज्ञानिक ढंग से खेती करने, सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी लेने में ज़्यादा समर्थ होता है। वह राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने एवं सामाजिक कार्यों में सफलतापूर्वक भागीदारी करने में सक्षम महसूस करता है।

बिहार में शिक्षा की स्थिति

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही सरकार के लिए हमारे संविधान ने एक लक्ष्य निर्धारित किया था कि दस वर्षों के अंदर 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध करायेगी। लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकी है। आज इतने वर्षों बाद भी सभी लोगों तक शिक्षा नहीं पहुँची। यह हमारे लिए बहुत चिन्ता का विषय है। आइए, अपने राज्य के उदाहरण से इस स्थिति को समझें।

एक दृष्टि हम नीचे की तालिका पर डालते हैं, जो बिहार की साक्षरता दर से सम्बन्धित है। साक्षरता दर यह बताती है कि कुल जनसंख्या में से कितने प्रतिशत लोग साक्षर हैं। यानी वैसे लोगों की कितनी संख्या है जो कम से कम अपना नाम लिख सकते हैं और कुछ सरल वाक्यों को पढ़ कर समझ सकते हैं।

भारत की जनगणना 2001 के अनुसार
बिहार की साक्षरता की स्थिति

कुल साक्षरता दर (प्रतिशत में)	पुरुष साक्षरता दर (प्रतिशत में)	महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में)	अनु. जाति साक्षरता दर (प्रतिशत में)	अनु. जनजाति साक्षरता दर (प्रतिशत में)
47	60	33	29	28

इस तालिका को देखने से यह पता चलता है कि अपने राज्य में शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय है। हमारी कुल साक्षरता दर आधी से भी कम है अर्थात् हमारे प्रदेश की कुल आबादी के आधे से ज़्यादा लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं। महिलाओं, अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों की स्थिति सबसे बदतर है। इनमें केवल एक तिहाई या (28-33 प्रतिशत) ही साक्षर हैं।

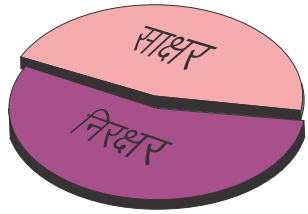

यह स्थिति इसलिए बनी हुई है क्योंकि स्कूल की व्यवस्था बहुत कमज़ोर है। बचपन में इन्हें स्कूल जाने का एवं पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला। हाल के वर्षों में सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के कारण साक्षरता दर में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिली है फिर भी शत-प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पायी।

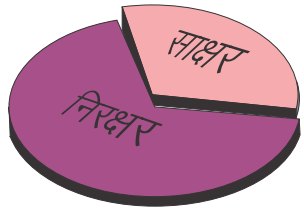

बच्चों द्वारा बच्चों का सर्वे

आज भी बच्चें विद्यालय क्यों नहीं जा रहे या पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं इसके लिए एक सर्वे करते हैं।

4-4 बच्चों की टोली बनाकर नीचे दिए गए प्रश्नों पर कम से कम तीन बच्चों से बात करना है। इन बच्चों की परिस्थिति अलग-अलग है। यह पता करने की कोशिश करें कि किन कारणों के चलते ये बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे।

(1) ऐसे बच्चे जो कभी स्कूल नहीं गये ।

वे कौन-कौन से कारण हैं जिनके चलते ये बच्चे कभी स्कूल नहीं गये ?

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....

(2) ऐसे बच्चे जो विद्यालय में पढ़ते थे ।

लेकिन उन्होंने बीच में ही जाना बंद कर दिया।

किन कारणों से ये बच्चे बीच में ही विद्यालय छोड़ दिए ?

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....

(3) ऐसे बच्चे जो बाल मज़दूर हैं।

किन-किन कारणों से ये बच्चे पढ़ने की उम्र में मज़दूरी करने लगे हैं ?

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....

(4) एक शैक्षणिक सर्वेक्षण कराएँ जो एक ही उम्र के सरकारी स्कूल, निजी स्कूल या और किसी अन्य प्रकार के स्कूल के बच्चों के बीच अन्तर करेंगे?

शिक्षक के लिए :

बच्चों द्वारा किये गये सर्वे को अध्यापक समूह कार्य के माध्यम से आंकड़ा एकत्रित कर उसका विश्लेषण करेंगे। बच्चों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार क्या मुख्य कारण नज़र आ रहे हैं? इसके लिए क्या करना चाहिए? चर्चा करें।

सरकार की भूमिका

शिक्षा प्राप्त करना हम सबका हक है। सबको शिक्षा उपलब्ध करवाना सरकार की ज़िम्मेदारी है। इस बात को पूरा करने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि इसे कानून का स्वरूप

दिया जाए, ताकि किसी को अगर शिक्षा उपलब्ध न हो तो वह न्यायालय का सहारा ले। इसके साथ-साथ शिक्षा के लिए बेहतर एवं उचित व्यवस्था करना ज़रूरी है। इस हेतु कई योजनाएँ शुरू की गई हैं जिसके तहत यह लक्ष्य पूरा हो सके। इसके कुछ उदाहरण हम नीचे देखेंगे।

1– अनुप्रिया, अंतरा, शालिनी, शबाना मध्य विद्यालय, नगदहा में आठवीं वर्ग की छात्राएँ हैं। यह विद्यालय उनके घर के काफ़ी नज़दीक है। इस कारण विद्यालय आने-जाने में उन्हें कोई असुविधा नहीं होती है। पर एक बात उनके मन को हमेशा कचोटती है कि शायद वे आगे की पढ़ाई नहीं कर पायेंगी। क्योंकि उच्च विद्यालय की दूरी गाँव से लगभग 5 कि.मी. है। विद्यालय दूर होने के कारण गाँव की अधिकतर लड़कियाँ कक्षा आठ के बाद पढ़ाई नहीं कर पाती, क्योंकि उन्हें विद्यालय आने-जाने में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उनके माता-पिता भी उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं। एक दिन अख़बार के माध्यम से पता चला कि कक्षा नौ में पढ़ने वाली सभी लड़कियों को सरकार द्वारा साइकिल दी जायेगी। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अब इस गाँव की सभी लड़कियाँ आगे की पढ़ाई कर सकती हैं। अब सभी लड़कियाँ आगे बढ़ सकती हैं। कक्षा आठ में उत्तीर्ण होने के बाद सबके माता-पिता ने अपनी-अपनी लड़कियों का नामांकन उच्च विद्यालय में करवा दिया। कुछ ही दिनों बाद विद्यालय प्रधान ने कक्षा नौ में पढ़ने वाली सभी लड़कियों के बीच साइकिल वितरित करवा दी। साइकिल पाकर ये लड़कियाँ आत्मविश्वास से परिपूर्ण दिखती हैं एवं समूह में विद्यालय जाती हैं।

साइकिल से विद्यालय जाती लड़कियाँ

1. अनुप्रिया एवं उसकी सहेलियाँ क्यों परेशान थीं, उन सबकी परेशानी कैसे दूर हुई ?
2. लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है ऐसा क्यों ? कारण सहित लिखें।
3. आपकी समझ में ऐसी क्या व्यवस्था हो सकती है जिससे लड़कियों को परेशानी न हो?

?

सुमित सरकारी विद्यालय में कक्षा पाँच का छात्र है। वह हमेशा खुश दिखता था पर इन दिनों चिंतित रहता है। उसकी चिंता का मुख्य कारण है किताबों का समय पर न मिलना। बाज़ार में भी उसकी पुस्तक नहीं बिकती, इसलिए चाहकर भी वह अपनी पुस्तक बाज़ार से खरीद नहीं पाया। सरकार की यह योजना है कि कक्षा एक से आठ तक के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले सभी बच्चों को निःशुल्क पुस्तकें दी जाएँगी, ताकि सभी वर्गों के बच्चे विद्यालय जा पाएँ। पाँचवीं कक्षा में आए सुमित को तीन माह हो गये। अब उसे यह चिन्ता भी सता रही है कि परीक्षा में वह क्या लिखेगा? प्रधानाध्यापक से कहने पर वह स्थिति की जानकारी लेते हैं एवं एक माह में पुस्तकें विद्यालय में पहुँच जाएँगी, ऐसा आश्वासन देते हैं।

1. सुमित की चिन्ता का क्या कारण था? यदि सुमित की जगह आप होते तो आपके मन में क्या-क्या विचार आते? आपस में चर्चा करें।
2. आपको समय पर किताब नहीं मिलने की स्थिति में प्रधानाध्यापक ने क्या प्रयास किया?
3. मध्याह्न भोजन योजना, पोशाक योजना, भवन निर्माण योजना, आँगनबाड़ी केन्द्र इत्यादि योजनाओं के विषय में शिक्षकों से चर्चा करें कि आखिर इनकी जरूरत क्यों है?
4. क्या आप अपने विद्यालय की पढ़ाई व्यवस्था से संतुष्ट हैं? अपने विचार लिखें।

?

एक नज़र शिक्षा के अधिकार पर

शिक्षा का अधिकार 1 अप्रैल 2010 से पूरे देश में लागू हो गया। शिक्षा के अधिकार के तहत 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। किसी भी बच्चे को कक्षा में रोका नहीं जाएगा और न ही निष्कासित किया जाएगा, सभी बच्चों को स्कूल जाना अनिवार्य है। जिन बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया है उन्हें मदद कर पुनः नामांकित किया जाएगा।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की भूमिका

जिस तरह शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की ज़िम्मेदारी है, उसी तरह स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सरकार की ज़िम्मेदारी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देश में लोगों की स्वास्थ्य की दशा अच्छी नहीं है। पीने के लिए स्वच्छ पानी की कमी, संतुलित आहार की कमी, दवाइयों की कमी, अस्पताल में अपर्याप्त बिस्तर, डॉक्टर की कमी आदि अनेक समस्याएँ हैं।

हमारे देश के संविधान के अनुसार सबको स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना सरकार का प्राथमिक कर्त्तव्य है। नागरिकों को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए, जिसमें आकस्मिक इलाज की सुविधा भी सम्मिलित हो। स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने वाली संस्थाएँ जैसे कि गाँव का स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, ज़िला अस्पताल आदि से अपेक्षा है कि वे सुचारु रूप से काम करें। गौरतलब है कि 2005 में रोगियों की औसत उपस्थिति प्रति स्वास्थ्य केन्द्र 39 थी। वह 2010 में बढ़ कर 4000 रोगी प्रतिमाह हो गयी है।

★ हमारे देश में प्रत्येक 1000 पैदा होने वाले बच्चों में से 300 बच्चों का वज़न बहुत कम होता है। पाँच वर्ष के अंदर इनमें से 143 बच्चों की मृत्यु हो जाती है। ये सभी बचाये जा सकते हैं।

★ हमारे देश में औरतों को सबसे ज़्यादा खतरा बच्चे को जन्म देने के समय होता है। 1,00,000 औरतों में से 400 औरतों की बच्चे के जन्म देते समय मौत हो जाती है। ये औरतें मरने से बचायी जा सकती हैं।

1. यह दोनों स्थितियाँ क्यों उत्पन्न होती है? इसके पीछे क्या-क्या कारण हैं?
2. इन दोनों स्थितियों में बच्चों और औरतों को कैसे बचाया जा सकता है?

?

समानता के आधार पर किसी समाज को खड़ा करने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य महत्त्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि इसकी व्यवस्था बेहतर बने और समान रूप से सभी को उपलब्ध हो। इसके लिए योजनाएँ बनाने और उन्हें व्यवस्थित रूप से लागू कराने में सरकार और समाज दोनों की साझी पहल आवश्यक है।

अभ्यास

1. सबके लिए स्वास्थ्य की सुविधा उपलब्ध करने के लिए सरकार कौन-कौन से कदम उठा सकती है ? चर्चा करें।
2. शिक्षा की स्थिति बेहतर करने के लिए सरकार की क्या भूमिका होनी चाहिए?
3. सर्वे क्यों किया जाता है? आपने इस पाठ में किए गए सर्वे से क्या समझा?
4. एक ही उम्र के बच्चे जो सरकारी स्कूल, निजी स्कूल या अन्य किसी स्कूल में पढ़ते हैं उनसे बातचीत करके पता करें कि इन स्कूलों में क्या समानता एवं अन्तर है।